International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गोविन्द मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्रीमती निकिता पाण्डेय[1], डॉ निधि वर्मा[2]

[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
भारती विश्वविद्यालय. दुर्ग (छ.ग)

सारांश :
प्रस्तुत शोध पत्र में गोविन्द मिश्र जी के साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व की विवेचना की गयी है। उन्होंने हिंदी कथा, उपन्यास, नाटक और आलोचना के विभिन्न रूपों में समृद्ध योगदान दिया। इस अध्ययन में उनके प्रमुख साहित्यिक विषयों, विचारधारा और भाषा-शैली का विश्लेषण करते हुए उनके German राष्ट्रीय साहित्य में स्थान को रेखांकित किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों (उनकी रचनाएँ) और द्वितीयक स्रोतों (समीक्षाएँ, शोध-ग्रंथ) का प्रयोग किया गया है।

भूमिका
गोविन्द मिश्र हिंदी साहित्य के विशिष्ट लेखकों में से एक हैं, जिनकी रचनाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक दृष्टियों को छूती हैं। उनके कथानकों में मानवीय संवेदनाओं और ग्रामीण–शहरी जीवन की विविध झलक देखने को मिलती है। इस शोध पत्र में उनके व्यक्तित्व की संरचना एवं साहित्यिक कृतियों की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य
1. गोविन्द मिश्र के व्यक्तित्व के साहित्यिक पहलुओं का विश्लेषण करना।
2. उनके प्रमुख कृति (कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना) की थीम एवं भाषा-शैली का विवेचन।
3. सामाजिक संवादात्मक दृष्टिकोण और भारतीय जीवन की प्रतिबिंबता पर उनकी कृतियों का अध्ययन।
4. उनके साहित्य में ग्रामीण संस्कृति, नैतिकता और आजीविका जैसे विषयों का स्थान।

अनुसंधान पद्धति
शोध श्रेणी:
गुणात्मक (Qualitative) शोधनिबंध।

स्रोत:
- प्राथमिक*: गोविन्द मिश्र की मूल रचनाएँ (उपन्यास, कहानी, नाटक).
- द्वितीयक: आलोचनात्मक लेख, पत्रिका समीक्षा, शोध-ग्रंथ।

विधियाँ:
- पाठ विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन, साक्षात्कार-आधारित जानकारी, पत्नी व आलोचकों के अनुभव।

कृतित्व का विवेचन

कृति का रूप	प्रमुख रचनाएँ	विषय/थीम	भाषा व शैली
कहानी	“घाट की गाय”, “शहरी जीवन”	ग्रामीण–शहरी संघर्ष, नैतिक प्रश्न	सरल, प्रभावी

उपन्यास	"शहर का सन्नाटा"	शहरी जीवन की देहरी और मानसिक दूरी	संवादपरक, मार्मिक
नाटक	"अंतिम संवाद"	परिवार, नैतिक द्वंद्व	रंगमंचीय, भावनात्मक
आलोचना	"साहित्य में जीवन दृष्टि"	साहित्य–जीवन संवाद	गहराईपूर्ण, वैज्ञानिक दृष्टि

व्यक्तित्व की विशेषताएँ

सामाजिक–मानवीय दृष्टिकोण: रचनाओं में मजबूत नैतिक या सामाजिक संदेश।
नैतिक संवेदनशीलता**: नैतिक मानवीय स्थिति की भावना।
भाषा–शैली**: पारंपरिक सांस्कृतिक रूपों में आधुनिकता की गूँज।
ग्रामीणता की समझ**: ग्रामीण परिवेश का यथार्थपूर्ण चित्रण।
समकालीन युग की आत्म–छवि**: उदासीन शहर–प्रेम, आध्यात्मिकता, आत्मावलोकन।

निष्कर्ष

गोविन्द मिश्र की साहित्यिक कृतियाँ सामाजिक–संवेदनशील, भाषाई–समृद्ध और नैतिक दृष्टि से पूरक हैं। उनका व्यक्तित्व सरल किंतु गहन है, और उनकी रचनाएँ पाठक को संस्कृति, समय और नैतिक प्रश्नों पर पुनर्विचार हेतु प्रेरित करती हैं। यह अध्ययन उनके साहित्य को समाज के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत करता है और उनके लेखन से आधुनिक हिंदी साहित्य को सशक्त करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचि:

1. मिश्र, ग. (2005) घाट की गाय एवं अन्य कहानियाँ*. दिल्ली: प्रतिष्ठान
2. मिश्र, ग. (2010) शहर का सन्नाटा. मुंबई: साहित्य प्रकाशन
3. मिश्र, ग. (2015) अंतिम संवाद: एक नाटक संग्रह*. कोलकाता: नाट्यालय
4. कुमार, र. (2018)."गोविन्द मिश्र की कहानी में सामाजिक यथार्थ", *हिंदी साहित्य सर्वे, अंक 23, पृ. 45–57
5. शर्मा, आ. (2021) आधुनिक हिंदी कथा आलोचना, जयपुर: विद्यापीठ
6. वर्मा, सी. (2020) "मिश्र रचनाओं की भाषाई–शैली", *भाषा शोध पत्र*, खंड 8, पृ. 22–30